



## आठ अधिकारी बनेंगे विशेष सचिव

राज्य ब्लूरो, लखनऊ

अमृत विचार : उप्र. सचिवालय सेवा संबंधी के अधिकारियों के लिए बड़ा अवसर खुल गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विशेष सचिव के आठ नए पदों के सुनान को मंजुरी दी है। इसके साथ ही सचिवालय सेवा से विशेष सचिव बनने वाले अधिकारियों की कुल संख्या 35 से बढ़कर 43 हो गई है।

सूत्रों के मुताबिक, सचिवालय सेवा से विशेष सचिव बनने वाले अधिकारियों के आठ पद बढ़ाने का प्रस्ताव कैबिनेट से 6 मई को स्वीकृत हो गया था, लेकिन संबंधित आदेश के साथ नहीं हो पा रहा था। बताते हैं कि शासन के एक उच्चाधिकारी ने शासन के गुलामों को रोक रखा था। वह अधिकारी

## सचिवालय सेवा के 11 अधिकारी कार्यमुक्त

अमृत विचार, लखनऊ : सचिवालय प्रशासन ने तबादले के बाद नए कार्यस्थल पर ज्ञान न करने वाले 11 अधिकारियों को स्वतः कार्यमुक्त कर दिया है। विभाग ने देवतानी दी है कि दो दिन में कार्यभार न सभालने पर संबंधित अधिकारियों पर अनुसारनिक कार्रवाई की जाएगी। सचिवालय प्रशासन विभाग ने फरवरी, सितंबर, अक्टूबर, नवंबर में जारी रखा अलग-अलग अधिकारियों से संपर्क संविधान, उप अधिकारी या उनके विभाग ने तबादला किया गया था। किंतु इन्होंने कई माहों बीतने के बाद भी कार्यभार नहीं ग्रहण किया। इस पर अब सचिवालय प्रशासन विभाग ने काफी सख्ती की है। सचिवालय प्रशासन विभाग के संयुक्त सचिव विजय कुमार मिश्र की ओर से जारी आदेश का कहा गया है कि इन सभी को एक दिसंबर को भी प्रति जारी कर दिया में अपेक्षा नीती रूप से जारी करने का निर्देश दिया गया। किंतु ऐसा न करने पर अब उन्हें रोकते कार्यमुक्त किया जाता है।

सचिवालय सेवा के दो संयुक्त सचिवों सेवानिवृत्त हो जाने के बाद पद बद्धाएं के सेवानिवृत्त हो जाने का इंतजार कर जाने की फाइल आगे बढ़ी। सचिवालय संघ के अध्यक्ष अर्जुन देव भारती ने मुख्यमंत्री और मुख्य सचिव के प्रति अक्टूबर को और दूसरे अधिकारी 30 नवंबर को उपरांत अधिकारी 31 रहे थे। इनमें से एक अधिकारी 31 अक्टूबर को और दूसरे अधिकारी 30 नवंबर को सेवानिवृत्त हुए। इन दोनों के

## मानक पूरे न करने वाले मदरसे में पांच शिक्षकों की नियुक्ति

## झांसी के मदरसे में फर्जीवाड़ा : पूर्व दिग्जिटार ने नियुक्ति को सही ठहराते हुए दी वित्तीय अनुमति

राज्य ब्लूरो, लखनऊ

• तीन कमरों के मदरसे में तीनताह 24 शिक्षक, मान्यता रद्द होने के बाद भी नहीं पूरा हुआ मानक



अमृत विचार : झांसी के नगरीय क्षेत्र में जजर तीन कमरों में मदरसा कॉम्पोलिटन कॉलेज, भट्टागांव संचालित हो रहा है। यह एक अनुदानित मदरसा है। जिसमें पहले से 24 अध्यापक तैनात हैं। जो सरकारी फंड से हर महीने मोटा बेतन उठा रहे हैं। हकीकत यह है कि मदरसे में बच्चों की संख्या न के बराबर है। इस मदरसे की मान्यता पहले मदरसा बोर्ड द्वारा निर्लिपित की गई थी। इसके बाद भी मदरसा बोर्ड के तत्कालीन रजिस्ट्रार और संप्रति सुरादाबाद मंडल

के उपनिदेशक का कार्य देख रहे जगमोहन सिंह विष्ट ने पांच शीत्र-शिक्षक अनुपात के मानक नए शिक्षकों की नियुक्तियों पर न केवल अनुमोदन प्राप्त किया बल्कि भारतीय की वित्तीय सहमति भी जारी कर दी। अनुमोदन देते समय न तो मदरसे के भवन व मानकों की जांच की गई। न ही छात्र-शिक्षक के अनुपात का प्राप्त किया गया। शिक्षकों की नियुक्ति वित्तीय अनुमोदन मदरसा प्रबंधन, जिस तरत के कुछ अधिकारियों की मिलिभाग से यह खेल किया गया। इस खेल में सरकारी धन का लाखों रुपये का दुरुपयोग किया गया।

आठ महीने में जांच रिपोर्ट आई। जिसमें भवन, कक्ष संख्या और आठ महीने में जांच रिपोर्ट आई। जिसमें 35 मदरसे मानकविहीन संचालित पाये गये। पर, स्थानीय प्रदेश में भारतीय की सरकार आई। अधिकारियों की मिलिभागत के कारण मदरसा कॉम्पोलिटन कॉलेज भट्टागांव का नाम सूची में नहीं ढाला गया।

## सभी विभाग समन्वय बना निर्माण कार्यों को दें गति

राज्य ब्लूरो, लखनऊ

• मुख्य सचिव ने बीड़ा की महायोजना-2045 और ललितपुर कार्मा पार्क के निर्माण कार्यों की समीक्षा की

प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है, जिसे शीघ्र शासन को भेज जाएगा। बीड़ा क्षेत्र के आठ सेक्टरों में जोनल प्रदेश में सभी जिलाधिकारियों को अनुमोदन और भारतीय की वित्तीय सहमति जारी कर दी।

प्रदेश में 22 जुलाई 2016 को नई मदरसा नियमावली लागू की गयी। जिसमें भवन, कक्ष संख्या और आठ महीने में जांच रिपोर्ट आई।

एसपी गोयल दिसंबर 2025 तक पूर्ण करने का लक्ष्य है।

जलापूर्ति व्यवस्था के लिए बीड़ा क्षेत्र के बाहर राजिङ्ग में पांच स्टेशन एवं ओरेंडपूर कार्य जल निगम द्वारा किया गया है।

मुख्य सचिव, गृहवार को अपने

कार्य प्रगति पर है और ओरेंडपूर

दिसंबर 2025 तक पूर्ण करने का लक्ष्य है।

जलापूर्ति व्यवस्था के लिए बीड़ा क्षेत्र के बाहर राजिङ्ग में पांच स्टेशन एवं ओरेंडपूर कार्य जल निगम द्वारा किया गया है।

प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है, जिसके लिए बीड़ा की वित्तीय सहमति जारी कर दी जाएगी। बीड़ा क्षेत्र के आठ सेक्टरों में जोनल प्रदेश में सभी जिलाधिकारियों को अनुमोदन और भारतीय की वित्तीय सहमति जारी कर दी।

प्रदेश में एसपी गोयल दिसंबर 2025 तक पूर्ण करने का लक्ष्य है।

जलापूर्ति व्यवस्था के लिए बीड़ा क्षेत्र के बाहर राजिङ्ग में पांच स्टेशन एवं ओरेंडपूर कार्य जल निगम द्वारा किया गया है।

मुख्य सचिव, गृहवार को अपने

कार्य प्रगति पर है और ओरेंडपूर

दिसंबर 2025 तक पूर्ण करने का लक्ष्य है।

जलापूर्ति व्यवस्था के लिए बीड़ा क्षेत्र के बाहर राजिङ्ग में पांच स्टेशन एवं ओरेंडपूर कार्य जल निगम द्वारा किया गया है।

प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है, जिसके लिए बीड़ा की वित्तीय सहमति जारी कर दी जाएगी। बीड़ा क्षेत्र के आठ सेक्टरों में जोनल प्रदेश में सभी जिलाधिकारियों को अनुमोदन और भारतीय की वित्तीय सहमति जारी कर दी।

प्रदेश में एसपी गोयल दिसंबर 2025 तक पूर्ण करने का लक्ष्य है।

जलापूर्ति व्यवस्था के लिए बीड़ा क्षेत्र के बाहर राजिङ्ग में पांच स्टेशन एवं ओरेंडपूर कार्य जल निगम द्वारा किया गया है।

प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है, जिसके लिए बीड़ा की वित्तीय सहमति जारी कर दी जाएगी। बीड़ा क्षेत्र के आठ सेक्टरों में जोनल प्रदेश में सभी जिलाधिकारियों को अनुमोदन और भारतीय की वित्तीय सहमति जारी कर दी।

प्रदेश में एसपी गोयल दिसंबर 2025 तक पूर्ण करने का लक्ष्य है।

जलापूर्ति व्यवस्था के लिए बीड़ा क्षेत्र के बाहर राजिङ्ग में पांच स्टेशन एवं ओरेंडपूर कार्य जल निगम द्वारा किया गया है।

प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है, जिसके लिए बीड़ा की वित्तीय सहमति जारी कर दी जाएगी। बीड़ा क्षेत्र के आठ सेक्टरों में जोनल प्रदेश में सभी जिलाधिकारियों को अनुमोदन और भारतीय की वित्तीय सहमति जारी कर दी।

प्रदेश में एसपी गोयल दिसंबर 2025 तक पूर्ण करने का लक्ष्य है।

जलापूर्ति व्यवस्था के लिए बीड़ा क्षेत्र के बाहर राजिङ्ग में पांच स्टेशन एवं ओरेंडपूर कार्य जल निगम द्वारा किया गया है।

प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है, जिसके लिए बीड़ा की वित्तीय सहमति जारी कर दी जाएगी। बीड़ा क्षेत्र के आठ सेक्टरों में जोनल प्रदेश में सभी जिलाधिकारियों को अनुमोदन और भारतीय की वित्तीय सहमति जारी कर दी।

प्रदेश में एसपी गोयल दिसंबर 2025 तक पूर्ण करने का लक्ष्य है।

जलापूर्ति व्यवस्था के लिए बीड़ा क्षेत्र के बाहर राजिङ्ग में पांच स्टेशन एवं ओरेंडपूर कार्य जल निगम द्वारा किया गया है।

प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है, जिसके लिए बीड़ा की वित्तीय सहमति जारी कर दी जाएगी। बीड़ा क्षेत्र के आठ सेक्टरों में जोनल प्रदेश में सभी जिलाधिकारियों को अनुमोदन और भारतीय की वित्तीय सहमति जारी कर दी।

प्रदेश में एसपी गोयल दिसंबर 2025 तक पूर्ण करने का लक्ष्य है।

जलापूर्ति व्यवस्था के लिए बीड़ा क्षेत्र के बाहर राजिङ्ग में पांच स्टेशन एवं ओरेंडपूर कार्य जल निगम द्वारा किया गया है।







## न्यूज ब्रीफ

विद्युतीकरण कार्य का  
आज होगा निरीक्षण

गोरखपुर, अमृत विचार: पूर्वोत्तर रेलवे पर लखनऊ मण्डल के गोरांगा-बुद्दल रेलखंड के घासधारा घाट-चौका घाट-बुद्दल स्टेनों के मध्य विद्युतीकरण सहित तीसरी लाइन का कार्य पूर्ण हो चुका है। रेल संस्था आयुक्त, उत्तर प्रूर्व मण्डल के इस निरीक्षण में विद्युतीकृत तीसरी लाइन का निरीक्षण करेंगे तथा स्पैड ट्रायल किया जायेगा। अतः रेल प्रशासन की आमजन से अपील है कि निरीक्षण एवं स्पैड ट्रायल के दौरान इस निरीक्षण में विद्युतीकृत तीसरी लाइन पर न तो रथय जायें और न ही अपेक्षाओं को जानें।

## दुर्घटनाओं को सुनाई उम्रकैद की सजा

कुशीनगर, अमृत विचार: विशेष न्यायाधीश पैक्सो एक दिनेश कुमार की अदालत ने मासूम बच्चों से दुर्घटना के अलांग-अलांग मामलों में दो अपीलों को जारी कराया। अपीलों के अन्तर्गत जनपद के दूसरे लोगों के इस निरीक्षण के दौरान सजा सुनाई है।

पुलिस ने सड़कों और चौराहों पर की चैकिंग

सिद्धार्थनगर, अमृत विचार: एंटी रोमियों रखावा और पुलिस टीम द्वारा मिशन शक्ति के अन्तर्गत जनपद के स्कूल-कॉलेज व भीड़-भाड़ आदि स्थानों पर मनवालों एवं शोहदों की चैकिंग की गयी। एंटीपी के आदेश के क्रम में मनवालों के विरुद्ध चारों जा रहे अंदाजित आय पाए जाने पर ब्रह्माचार यह साबित नहीं है कि जांच अधिकारी ने

## जांच एजेंसियों के रूप में कार्य नहीं कर सकती कोर्ट: हाईकोर्ट

बेंच ने कहा, जांच का माइक्रो-मैनेजमेंट अदालत के क्षेत्राधिकार से बाहर

विधि संवाददाता, प्रयागराज

अमृत विचार: इलाहाबाद हाईकोर्ट ने भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत दर्ज आय से अधिक संपत्ति के एक मामले में उत्तर प्रदेश जल निगम के कार्यकारी अधिकारियों को यह निर्देश नहीं दे सकती कि वे कौन-से दस्तावेज स्वीकार करें।

किस साक्ष्य पर विचार करें और किस तरह से जांच आगे बढ़ाएं। जांच का माइक्रो-मैनेजमेंट कोर्ट के क्षेत्राधिकार से बाहर है।

कुशीनगर, अमृत विचार: विशेष न्यायाधीश पैक्सो एक दिनेश कुमार की अदालत ने मासूम बच्चों से दुर्घटना के अलांग-अलांग मामलों में दो अपीलों को जारी कराया। अपीलों के अन्तर्गत जनपद के दूसरे लोगों के इस निरीक्षण के दौरान सजा सुनाई है।

पुलिस ने सड़कों और चौराहों पर की चैकिंग

सिद्धार्थनगर, अमृत विचार: एंटी रोमियों रखावा और पुलिस टीम द्वारा मिशन शक्ति के अन्तर्गत जनपद के स्कूल-कॉलेज व भीड़-भाड़ आदि स्थानों पर मनवालों एवं शोहदों की चैकिंग की गयी। जारीपी के आदेश के क्रम में मनवालों के विरुद्ध चारों जा रहे अंदाजित आय पाए जाने पर ब्रह्माचार



दस्तावेज लेने से इनकार किया था, तो कोर्ट दस्तावेज दोबारा शामिल करने का आदेश नहीं दे सकती, क्योंकि अधियुक्त को द्यावल के दौरान सीधे पैसी की धारा 313, वीणासंसाकृति की धारा 351, प्रतिरक्षा साक्ष्य या दस्तावेज साक्ष्य के रूप में इन दस्तावेजों को प्रस्तुत करने का पूरा अवसर मिलता है। कोर्ट ने कहा कि अधियुक्त पहले ही जांच के दौरान बयान दे चुका है तथा दस्तावेज प्रस्तुत कर चुका है और ऐसी कोई सामान्यांकित प्रक्रिया नहीं है, जिससे संकेत मिले कि जांच अधिकारी ने दस्तावेज प्रस्तुत कर चुका है और संकेत मिले कि जांच एजेंसी का वरेली सेक्रेटर (विजिलेंस इस्टेलिशमेंट) में एफआईआर दर्ज करवाई गई। इस संबंध में कोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट के फैसलों का हावला देते हुए कहा कि जांच एजेंसी की विवादित नियमिती के बाबत विवाद नहीं है।

निवारण अधिनियम की धारा 13(1) (बी) व 13(2) के तहत पुलिस स्टेशन

वरेली सेक्रेटर (विजिलेंस इस्टेलिशमेंट)

का हावला देते हुए कहा कि जांच एजेंसी

का विवाद देते हुए और कोर्ट जांच को सचालित या

नियन्त्रित नहीं कर सकती, क्योंकि ऐसा

करना न्यायपालिका को जांच एजेंसी में

बदलने के बाबत होगा। केवल असाधारण

की छंडपाली ने मन्योजन करने की ओर चालक

याचिका को खालिज करते हुए प्रारंभ किया।

योजूदा याचिका में विजिलेंस की जांच

में उसके द्वारा दिए गए आय-स्रोत संबंधी

दस्तावेजों पर विचार करने के लिए निरेश

दिए जाने तथा मामले में जांच को समयबद्ध

तब कोर्ट सीमित दायरे में हस्तक्षेप कर

करते हुए और कोर्ट जांच को संचालित या

नियन्त्रित नहीं कर सकती।

अंत में कोर्ट ने कहा कि आय से अधिक संपत्ति

के मामले स्वाभावत: साक्ष्य-प्रधान होते हैं

प्रतिवितियों में, जब दस्तावेज संकेत मिले कि जांच अधिकारी ने दस्तावेज शामिल करने देते हुए न्यायिक आदेश देने का प्रश्न ही नहीं उठता। अंत में कोर्ट ने कहा कि आय से अधिक संपत्ति के मामले स्वाभावत: साक्ष्य-प्रधान होते हैं और अधिकारी ने अवैध योजना को अवैध संपत्ति साबित करने की ओर चालक याचिका को खालिज करते हुए प्रारंभ किया।

याच





मय मानव जीवन की सबसे रहस्यमय अवधारणा है। यह वह आयाम है, जो हर क्षण हमारे अस्तित्व को आगे बढ़ाता है, परंतु जिसे हम रोक नहीं सकते। सभ्यता की शुरुआत से ही मनुष्य यह समझने की कोशिश करता आया है कि क्या समय की गति को नियंत्रित किया जा सकता है, क्या अतीत या भविष्य में यात्रा संभव है? समय यात्रा या टाइम ट्रैवल का विचार इसी जिज्ञासा से जन्मा और आज यह कल्पना से निकलकर वैज्ञानिक शोध का गंभीर विषय बन चुका है। हाल के वर्षों में वैज्ञानिकों ने समय और अंतरिक्ष को समझने के लिए कई नई खोजें की हैं। ऑस्ट्रिया की एक डमी ऑफ साइंसेज और विद्यालय के वैज्ञानिकों ने क्वांटम



राजेश श्रीवास्तव  
वरिष्ठ प्रकार



# टाइम ट्रैवल

## विज्ञान, अंतरिक्ष और समय का संगम

### कारण और परिणाम का संतुलन

इसी साल 2025 में एक सिंड्रोम के नाम से वैज्ञानिकों ने एक विश्वासी विकास का उपयोग करते हुए वैज्ञानिक गुरुत्वाकर्षण के कारण होने वाले सूक्ष्म समय कणों की दुनिया में समय की दिशा बदली जा सकती है। इसी तरह, एटम इंटरफेरोमीटर का उपयोग करते हुए वैज्ञानिक गुरुत्वाकर्षण के कारण होने वाले सूक्ष्म समय विस्तार को मापने की नई विधि विकसित कर रहे हैं। यह प्रयोग भविष्य में ऐसी घड़ियां बनाने का आधार बन सकता है, जो ब्रह्मांडीय स्तर पर भी समय की सटीकता को माप सकें।



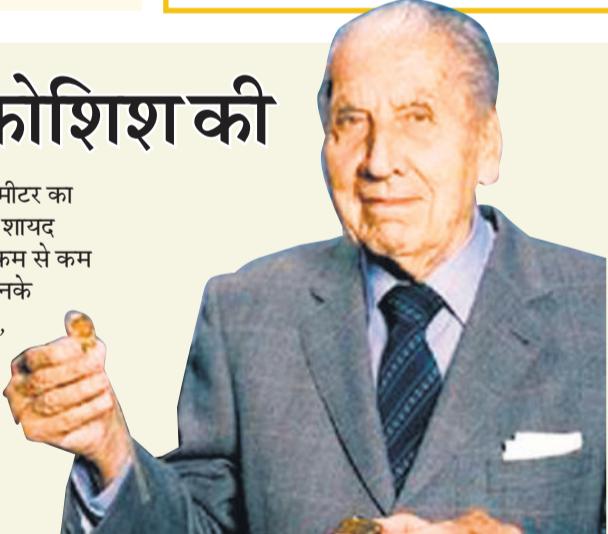
### अतीत में लौटना अभी भी रहस्य

बीसवीं सदी की शुरुआत में अल्बर्ट आइंस्टीन के सापेक्ष सिद्धांत ने समय और अंतरिक्ष की हमारी समझ को पूरी तरह बदल दिया था। इससे पहले इन्हें दो अलग-अलग इकाइयां माना जाता था, परंतु आइंस्टीन ने बताया कि ये दोनों मिलकर अंतरिक्ष-काल (स्पेस-टाइम) नामक एक चार आयामी संरचना बनाते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, जब कोई वस्तु बहुत तेज गति से लालती है, तो उसके लिए समय धीमा हो जाता है। यही समय यात्रा की वैज्ञानिक नींव रखता है। यह विचार केवल सैद्धांतिक नहीं है। प्रयोगों में पाया गया है कि पृथ्वी के चारों ओर उपग्रहों में लगे परमाणु घड़ियों का समय जमीन की घड़ियों से थोड़ा धीमा चलता है। यह अंतर बहुत सूक्ष्म होता है, पर सटीक गणनाओं से इसको पुष्टि ही है। इसका अर्थ यह है कि जो वस्तु तेजी से चल रही है, उसके लिए समय की गति सचमुच बदल जाती है।

ओर बढ़ते हैं। इस टाइपिकों में समय यात्रा के बाबत धारणा का विस्तार है, वास्तविक गमन नहीं। वैज्ञानिकों ने यह विषय हमेशा से लोकप्रिय रहा है। एजी बैलस की द टाइम मशीन से लेकर इंटरटेन्मेंट और ट्रेनेट जैसे फिल्मों तक, समय यात्रा ने लोगों को न केवल मोरोजन दिया है, बल्कि विज्ञान के प्रति जिज्ञासा भी जारी है। इंटरटेन्मेंट में दिखाया गया लोक होल का समय विस्तार वास्तविक आइंस्टीनिन गणनाओं पर आधारित था और वैज्ञानिक रूप से साही भी माना गया। इन सैद्धांतिक रूप से समय में आगे पीछे जाने का मार्ग बन सकता है। हालांकि अब तक इसका कोई प्रायोगिक प्रयोग नहीं मिला है, पर वैज्ञानिक इसे गणितीय समीकरणों के माध्यम से संभव मानते हैं।

### मानव पर गहरा प्रभाव

खगोलशिक्षियों ने दूरस्थि विद्यालय के अध्ययन से यह भी पाया है कि अत्यधिक दूरस्थि विद्यालय पिंडों की गतिविधियों में समय का प्रवाह अपेक्षा से थोड़ा दिखाई देता है। यह कोरिक्ट टाइम डाइलेशन का प्रयोग प्रमाण है। यांत्री जैसे जैसे ब्रह्मांड फैल रहा है, समय खट्ट भी फैल रहा है। वैटांटम स्तर पर भी समय को लेकर नई समझ विकसित हो रहा है। वैज्ञानिकों का मत है कि समय और स्थान का ब्रह्मांड के मूल तत्त्व नहीं, बल्कि किसी गहरे वैटांटम दांधे से उत्पन्न गुण है। यदि यह सत्य है, तो समय की दिशा और प्रवाह केवल हमारी चेतना का अनुभव हो सकता है, वास्तविक नहीं। समय यात्रा का विषय दाशनिक दृष्टि से थोड़ा उतार ही रोधक है। यदि कोई व्यक्ति अतीत में जाकर कुछ बदल दे, तो क्या वर्तमान बदल जाएगा? यह प्रश्न मानव रत्नतंत्र इच्छा और नियति दोनों पर गहरा प्रभाव डालता है। रिएक्ट्रोडमांडल के अनुसार वर्तमान के असभव बदल जाता है, उसके लिए समय यात्रा सैद्धांतिक रूप से संभव हो जाती है।



## जब विज्ञान ने दिमाग को काबू करने की कोशिश की

मैट्टिड विश्वविद्यालय के स्नातक जोस डेलगाडो (1915-2011) को येल विश्वविद्यालय में भले ही एक प्रतिष्ठित प्रोफेसर का पद मिला है, लेकिन इस प्रतिष्ठित संस्थान के शरीर विज्ञान विभाग में उनका शोध वेहद अजीब था, क्योंकि यह कुल मिलाकर मन पर नियंत्रण से संबंधित था। हम माजाक नहीं कर रहे हैं। 1950 और 60 के दशक में येल में रहते हुए, डेलगाडो ने प्राइमेट्स के मस्तिष्क में इलेक्ट्रोड इम्प्लांट लगाए और एक रिमोट कंट्रोल का इस्टेमेल करके रेडियो फ्रीक्वेंसी जारी की जिससे जानवर जटिल गतिविधियां कर पाए। बाद में, उन्होंने एक बैल के मस्तिष्क में एक इम्प्लांट लगाया।

और उस जानवर के साथ रिंग में उतरे और अपने ट्रांसमीटर का इस्टेमाल करके उसे चार्ज होने से पहले ही रोक दिया। शायद सबसे ज्यादा चिंताजनक बात यह थी कि डेलगाडो ने कम से कम 25 लोगों को तात्से से जोड़ा था। व्यावहारिक रूप से, उनके उपकरण का असर सिर्फ लोगों की आकाशमन्त्री पर था, लेकिन वे मन पर नियंत्रण पाने के लिए लगातार प्रयास करते रहे, एक बार उन्होंने डरावने अंदाज में कहा था, "हम मस्तिष्क को इलेक्ट्रोनिक रूप से नियंत्रित करना होगा।" किसी दिन सेनाओं और जनरलों को मस्तिष्क के विद्युतीय उत्तेजना से नियंत्रित किया जाएगा।"

### जानकारी



बबू दंवा  
नीताल



पूर्व में इस मंडल में माना जाता था कि सातऋषि में सात तारों के साथ एक हजार तारों का विशाल समूह है, मगर नई खोजों के अनुसार इस तारा मंडल में तीन हजार तारे शामिल हैं, जो एक ही समय में और एक ही गैस के बादलों से इनका निर्माण हुआ है। यह दो हजार प्रकाशवर्ष के दूरप्ये में फैले हुए हैं। तारों की इस अजूबी दुनिया को दृष्टीन से बखूबी देखा जा सकता है। अब यह तार एक दूसरे से बहुत दूर-दूर विखर चुके हैं। खोजकर्ता वैज्ञानिकों का कहना है कि स्वच्छ दत्ता तारा समूह एक स्थान में स्थायी नहीं होता है। सप्तऋषि मंडल में कुछ मिलियन सालों में आकाश गंगा के गुरुत्वाकर्षण प्रभाव और पास के बादलों से टक्कर के कारण तारे धीरे-धीरे एक-दूसरे से दूर जा रहे हैं। यानी विखरने तो हैं। अगले कुछ लाखों साल बाद इसके सातों चम्पाले खूबसूरत तारे अलग-अलग दिशाओं में चल जाएंगे।

### सप्तऋषि मंडल का धार्मिक आध्यात्मिक वैदिक महत्व

हिंदू धर्म और ज्योतिषशास्त्र में सप्तऋषि तारा मंडल का बहुत ऊंचा धार्मिक, आध्यात्मिक और वैदिक महत्व है और पात्रिका है। इसके अलावा इसका धार्मिक अध्ययन करते आगे बढ़ते हैं। यह दृष्टि के अन्तर्गत इसका धार्मिक रूप से संभव है। इसकी उपस्थिति की दिशा और गति का विषय है। यह दृष्टि के अन्तर्गत इसका धार्मिक रूप से संभव है। इसकी उपस्थिति की दिशा और गति का विषय है। यह दृष्टि के अन्तर्गत इसका धार्मिक रूप से संभव है। इसकी उपस्थिति की दिशा और गति का विषय है। यह दृष्टि के अन्तर्गत इसका धार्मिक रूप से संभव है।

### वैज्ञानिकों के अध्ययन का बड़ा केंद्र

आर्द्धेन्द्र प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) के तारों के विषय खोजों के द्वारा नियंत्रित किया जाता है। इसकी उपस्थिति की दिशा और गति का विषय है। सप्तऋषि तारा मंडल को सात महान ऋषियों का आकाशीय रूप माना जाता है, जिनमें कश्यप, अश्विन, विश्वमित्र, गोतम, जमदग्नि व भारद्वाज शामिल हैं। ये सात ऋषि वैदिकों के द्वारा हैं और ब्रह्मज्ञान की प्रोत्साहित करने की दिशा में चल रहे हैं। इसकी उपस्थिति की दिशा और गति का विषय है। यह दृष्टि के अन्तर्गत इसका धार्मिक रूप से संभव है। इसकी उपस्थिति की दिशा और गति का विषय है। यह दृष्टि के अन्तर्गत इसका धार्मिक रूप से संभव है।

### जंगल की दुनिया

## गोल्डन लंगूर: असम-भूटान की सीमा का सुनहरा रत्न



भारत के उत्तर-पूर्वी राज्य असम और पड़ोसी देश भूटान की सीमा पर बसे घने, शांत और जीव-विविधता से समृद्ध जंगलों में एक अनोखा जीव पाया जाता है—गोल्डन लंगूर। अपनी चमकीली सुनहरी फर और सौंप्य व्यवहार के कारण यह बंदर दुनिया की सबसे रहस्यमयी और मनमोहक प्रजातियों में गिना जाता है। हारनी की बात यह है कि इनका सूंदर और दुर्लभ जीव वैज्ञानिकों की नजर में फैली थी। इन सैद्धांतिक रूप से लोग इसके बारे में जानते थे, लेकिन आधुनिक विज्ञान के इसकी उपस्थिति की कोई स्पष्ट जानकारी नहीं थी। गोल्डन लंगूर अपनी लंबी रेशमी पूँछ, नरम सुनहरी से लेकर क्रीमी रंग तक फैली फर और अधिव्यक्तिपूर्ण चेहरे की वजह से तुरत ध्यान आक





